अख़्लाक़ी
कहानियां

तीसरा हिस्सा

सम्पादनः
अफ़ज़ल हुसैन एम. ए. एल. टी.

अनुवाद :
नसीम ग़ाज़ी फ़लाही

क्या कहां

अच्छा सुलूक □ ४
सादगी □ ६
हिम्मत □ ८
हराम से परहेज़ □ १०
मेहनत की कमाई □ ११
मांगने से बचो □ १२
बेतकल्लुफ़ी □ १४
ज़िम्मेदारी का अहसास □ १६
बेटे के लिए क़ुरबानी □ १९
एहतियात □ २१
अमन की कोशिश □ २३
सब्र □ २६
पड़ोसी का हक़ □ २८
मेहमान की ख़ातिरदारी □ ३०
कितने ईमानदार थे ! □ ३२
बहादुरी □ ३४
तड़क-भड़क कपड़ों से बचो □ ३७
लोगों की भलाई के काम □ ३९

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

"शुरू अल्लाह-रहमान, रहीम के नाम से"

१

अच्छा सुलूक

हिन्दुस्तान के मुसलमान बादशाहों में से एक का नाम नासिरुद्दीन था। वह बहुत ही नेक और नर्म मिज़ाज का बादशाह था। सरकारी ख़ज़ाने से अपने निजी ख़र्च के लिए एक पैसा भी नही लेता था। ज़िन्दगी गुज़ारने के लिए उसने सुलेख (खुश नवेसी) को ज़रिया बनाया था। कुरआन पाक और दूसरी किताबें लिख कर उनकी आमदनी से अपने ख़र्च पूरे करता था।

एक बार की बात है कि कोई रईस आपसे मिलने आया। आप ने हाथ का ख़ूबसूरत लिखा हुआ एक कुरआन पाक दिखाया। रईस उसे देख कर बहुत ख़ुश हुआ। ग़ौर से देखता रहा, फिर बोला, "इसमें कुछ ग़लतियां हैं, इन्हें ठीक कर लीजिएगा।"

रईस की निकाली हुई ग़लतियां हक़ीक़त में ग़लतियाँ न थीं, फिर भी नासिरुद्दीन ने बिल्कुल बुरा न माना, बल्कि मुस्करा कर उसका बहुत-बहुत शुक्रिया अदा किया। उसने जिन ग़लतियों की तरफ इशारा किया था, उनको घेर दिया कि बाद में ठीक कर ली जाएंगी।

उस वक़्त जो लोग मौजूद थे, वे बादशाह का यह अख़्लाक़ देखकर दंग रह गए। रईस के चले जाने के बाद बादशाह ने सब घेरे मिटा दिए। लोगों ने वजह पूछी, तो बादशाह ने कहा—

"मुझे मालूम था कि ग़लती कोई नहीं है। लेकिन मैं अपने

मेहमान को शर्मिन्दा करना या उसका दिल दुखाना नहीं चाहता था, इसीलिए अपनी ग़लतियां मान करके उनको घेर दिया था। अब वे घेरे मिटा दिये गये।"

बादशाह के इस अच्छे बर्ताव से दरबारियों पर बहुत असर हुआ। उन्हें ताज्जुब था कि इतने बड़े बादशाह ने एक मामूली रईस का दिल रखने के लिए ऐसा सुलूक किया।

सवाल :

१. नासिरुद्दीन कैसा बादशाह था? उसमें कौन-कौन सी ख़ूबियाँ थी?
२. उसने ग़लतियां न होने पर भी शब्दों को क्यों घेर दिया था?

२

सादगी

हज़रत सलमान (रज़ि०) एक बड़े सहाबी हुए हैं। वे ईरान के रहने वाले थे। उनके बाप उनसे बड़ा प्रेम करते थे। लड़कियों की तरह घर से बाहर न जाने देते थे। बचपन से ही दीन की ख़िदमत की उनके मन में बड़ी उमंग थी। शुरू में वे आग की पूजा करते थे। एक बार ऐसा हुआ कि जायदाद की देख-भाल के लिए उनके बाप ने उन्हें गाँव भेजा। रास्ते में एक गिरजा मिला, उसमें उस समय नमाज़ हो रही थी। उससे उन पर बहुत असर पड़ा। अब उन्हें सच्चे दीन की खोज हुई। एक क़ाफ़िले के साथ चुपके से शाम पहुंचे। ईसाई पादरियों के साथ रहने-सहने लगे। मगर वहां उन्हें सुकून न मिला। वे पादरियों के मुंह से अरब में आख़िरी नबी के आने की ख़बर सुना करते थे। उन्हें उसी नबी का इन्तज़ार था।

एक बार एक अरबी क़ाफ़िले से मुलाकात हुई। उन्होंने अपनी सब गाय-बकरियाँ जो पाल रखी थीं, उसे क़ाफ़िले के हवाले कर दीं। और कहा :– "मुझे इसके बदले तुम अपने शहर ले चलो।" वे उनको अपने साथ ले आये, मगर छल कर उनको ग़ुलाम बना लिया और एक यहूदी के हाथ बेच दिया। अब बेचारे पाबन्द हो गये। नबी (सल्ल०) की ख़िदमत में हाज़िर न हो सके। नबी (सल्ल०) जब हिजरत करके मदीना पहुंचे तो, इत्तिफ़ाक़ से वह भी एक आदमी के हाथ बिक कर मदीना आये। यहाँ नबी (सल्ल०) की ख़िदमत में पहुंचे और उन्हें जांच परख कर मुसलमान हो गये।

नबी (सल्ल०) ने उन्हें ग़ुलामी से भी आज़ाद करा दिया।

हज़रत उमर (रज़ि०) के समय में वे मदाइन के गवर्नर हुए। सालाना पांच हज़ार दीनार उनको तनख़्वाह मिलने लगी। लेकिन जब सरकारी ख़ज़ाने से पैसा मिलता तो वे उसे ग़रीबों और मुहताजों में बांट देते और ख़ुद चटाई बुनकर रोज़ी कमाते। उन्होंने अपने लिए घर नहीं बनवाया, पेड़ों और दीवारों की छाया में पड़े रहते। एक प्याला और एक लोटा यही हमारे गवर्नर का कुल सामान था। इस पर भी यह हाल था कि जब मरने का समय आया तो इन चीज़ों को देखकर रोते थे। उन्हें यह भी बोझ मालूम होता था।

सवाल :

१. हज़रत सलमान (रज़ि०) कौन थे? वह मदीना किस तरह आये?
२. उन्होंने इस्लाम किस तरह क़ुबूल किया?
३. गवर्नरी मिलने पर उनका रहन-सहन कैसा था?

३

हिम्मत

हज़रत उस्मान (रज़ि०) की ख़िलाफ़त के समय की बात है रोमियों से एक बार लड़ाई हुई। मुसलमानों की तरफ़ से मिस्र के गवर्नर को फ़ौज का कमान्डर बना दिया गया। वे बीस हज़ार मुजाहिदों की फ़ौज लेकर रवाना हुए। रोमियों की फ़ौज में लगभग दो लाख फ़ौजी थे। बड़ी घमासान की लड़ाई हुई। लड़ाई हो ही रही थी। कि रूमी फ़ौज के कमान्डर ने ऐलान किया कि मुसलमानों के कमान्डर को जो क़त्ल करेगा, मैं उससे अपनी बेटी की शादी कर दूंगा। और एक लाख दीनार इनाम में दूंगा।

मुसलमानों ने जब यह ऐलान सुना, तो उनमें से कुछ तो घबरा गए। हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि०) भी मुजाहिदों में मौजूद थे। उनकी उम्र ज़्यादा न थी। मगर वे बड़े बहादुर और साहसी थे। उनको जब ख़बर हुई तो बोले, "इसमें घबराने की क्या बात है। हमारी तरफ से भी ऐलान किया जाय कि जो मुजाहिद भी रूमी कमान्डर को क़त्ल करेगा, उसकी शादी उसी कमान्डर की बेटी से कर दी जाएगी। और एक लाख दीनार के अलावा उसे उन शहरों का अमीर भी बना दिया जाएगा, जो रूमी कमान्डर के क़ब्ज़े में हैं।"

बहरहाल बड़ी देर तक मुक़ाबला होता रहा। जंग के बीच में हज़रत अब्दुल्लाह की निगाह रूमी कमान्डर पर पड़ी, वह अपनी

फ़ौज के पीछे था और दो दासियां मोरछल का साया किए हुए थीं। उन्होंने जब उसका यह हाल देखा तो उसकी बुज़दिली का अन्दाज़ा लगा लिया। उसे ग़ाफ़िल पाकर वह आगे बढ़े, फ़ौज से हटकर अकेले बढ़ते चले गये और जा कर हमला कर ही दिया। वह समझता रहा कि यह अकेले बढ़ते चले आ रहे हैं, शायद समझौते का पैग़ाम ला रहे हों वरना, अकेले बढ़ने की हिम्मत एक कम उम्र आदमी को कैसे हो सकती है।

उन्होंने हमला करके तलवार से उसका सिर काट लिया और बर्छे पर उठा कर ले आये, सारे फ़ौजी देखते रह गये।

सवाल :

१. रूमी कमान्डर ने क्या एलान किया था? उस एलान का क्या असर हुआ।
२. हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर ने क्या किया?
३. वे सरदार की बुज़दिली को कैसे ताड़ गये थे?

४

हराम से परहेज़

हज़रत अबूबक्र (रज़ि०) का एक गुलाम था। वह उसे इसका मौक़ा देते कि वह कुछ कमा लिया करे। वह कमा कर लाता और पाबन्दी से अपनी कमाई का कुछ हिस्सा हज़रत अबूबक्र के लिए भी निकालता था। उसको आप अपने ख़र्च में लाते।

एक दिन गुलाम को कमाई में खाने की कोई चीज़ मिली। उसने पहले की तरह उसका भी एक हिस्सा हज़रत अबूबक्र (रज़ि०) को पेश किया। आपने खाना शुरू किया तो गुलाम बोला—

"यह जो आप खा रहे हैं, क्या इसके बारे में आपको मालूम है कि यह मुझे किस तरह हासिल हुआ है?"

"मुझे क्या पता" हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) ने कहा, "तुम बताओ क्या बात है?"

गुलाम बोला— "मैंने इस्लाम क़ुबूल करने से पहले एक आदमी के लिए फ़ाल निकाली थी। फ़ाल निकालना तो मैं जानता न था, सिर्फ़ धोखा दिया था, आज वह आदमी मिला और उसने फ़ाल देखने के बदले में यह चीज़ दी, जो आप खा रहे हैं।"

आप ने यह सुना तो चेहरा बदल गया, उठे और जो कुछ खाया था, हलक़ में उंगली डाल कर सब क़ै कर दी। तुम ही सोचो हराम की कमाई से हासिल की हुई चीज़ वह गले के नीचे कैसे उतार सकते थे?

५

मेहनत की कमाई

एक बार की बात है। प्यारे नबी (सल्ल०) बैठे हुए थे। इतने में एक सहाबी हाज़िर हुए। सलाम किया, प्यारे नबी (सल्ल०) बड़े तपाक से मिले। आप (सल्ल०) अपने साथियों से बड़ा प्रेम करते थे। हाथ पकड़ कर बिठाने चले तो देखा कि हाथ काले पड़े हुए हैं।

आपने बड़ी हैरत से पूछा "क्यों भाई! क्या तुम्हारे हाथ पर कुछ लिखा हुआ है? ये काले-काले निशान कैसे हैं?"

उन्होंने कहा, "नहीं हुज़ूर! यह बात नहीं है। असल में अपने बाल-बच्चों का पेट पालने के लिए मैं पत्थर पर फावड़ा चलाता हूं, उसी की मज़दूरी से हमारा गुज़र-बसर होता है। फावड़ा चलाने की वजह से मेरे हाथ काले पड़ गये हैं, यह सब घट्टों के निशान हैं, कुछ लिखा नहीं है।"

सहाबी की बात सुनकर हुज़ूर (सल्ल०) बहुत खुश हुए और उनका हाथ चूम लिया और ऐसा क्यों न होता, यह कितनी खुशी की बात थी कि एक ग़रीब आदमी है, किसी के आगे हाथ नहीं फैलाता। धोखा-धड़ी और बेईमानी से पैसे नहीं कमाता, बल्कि मेहनत-मज़दूरी करके अपना और अपने बाल-बच्चों का पेट पालता है और इतनी मेहनत करता है कि हाथ काले पड़ जाते हैं। प्यारे नबी की निगाह में यह बात बहुत ही पसन्दीदा थी, इसीलिए तो आप (सल्ल०) ने हाथ चूम लिया।

६

मांगने से बचो

इन्सान को अल्लाह ने बड़ा ऊंचा दर्जा दिया है, उसे अपना ख़लीफ़ा बनाया है। दुनिया भर का सामान दिया है। भला इन्सान को यह बात कब शोभा (ज़ेब) दे सकती है कि वह दूसरों के सामने हाथ फैला कर अपना अपमान करे। इसी लिए प्यारे नबी (सल्ल०) अपने साथियों को बड़ा खुद्दार बनाना चाहते थे, ताकि वे अल्लाह के हुक्मों का ठीक-ठीक हक़ अदा कर सकें।

एक बार की बात है कि कुछ सहाबी प्यारे नबी (सल्ल०) के पास पहुंचे। ये लोग नये-नये मुसलमान हुये थे। आप (सल्ल०) ने उनके सामने जहां और बहुत सी शर्तें रखीं, वहीं एक शर्त यह भी थी कि तुम किसी से सवाल नहीं करोगे। किसी से कुछ मांगोगे नहीं।

सहाबा (रज़ि०) इस बात पर सख़्ती से अमल करते थे, यहां तक कि अगर सवारी पर जा रहे होते और कोड़ा नीचे गिर जाता तो साथ के पैदल चलने वालों से यह कहना भी पसन्द न करते थे कि "भाई! ज़रा मेरा कोड़ा उठा देना।" बल्कि खुद ऊंट को बिठा कर कोड़ा उठा लेते।

एक बार की बात है, हज़रत अबूबक्र ऊंटनी पर सवार कहीं जा रहे थे। इत्तिफ़ाक़ से लगाम हाथ से छूट कर नीचे गिर गई। आप ने ऊंटनी को बिठाया, उतर कर लगाम हाथ में ली और फिर

रवाना हुए। लोगों ने कहा, "हज़रत! आप ने क्यों तकलीफ़ की?" हम लोग तो मौजूद ही थे, हमसे क्यों न कहा? यह कौन सी बड़ी बात थी हम उठा देते?" आप ने फ़र्माया।

"सकत होते हुए भी किसी से मांगना मोमिन को ज़ेब नहीं देता। मैंने अपने दोस्त हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (सल्ल०) से अहद किया था कि किसी से कुछ न मागूंगा।"

सवाल :

१. खुद्दारी को ठेस सबसे ज़्यादा किस बात से लगती है?
२. हुज़ूर (सल्ल०) अपनी उम्मत को क्या देखना चाहते थे?
३. भीख मागना किसी मोमिन की शान के ख़िलाफ़ क्यों है?
४. हज़रत अबूबक्र (रज़ि०) ने ऊंटनी बिठा कर खुद कोड़ा क्यों उठाया?
५. साथियों की बात का उन्होंने क्या जवाब दिया?
६. इस सबक़ से क्या नसीहत मिलती है?

७

बे-तकल्लुफ़ी

चचा सादी (रह०) बहुत बड़े आलिम और फ़ारसी के अच्छे शायर थे। रहने वाले तो शीराज़ के थे, परन्तु तालीम हासिल करने के लिए बड़ी दूर-दूर तक का सफ़र किया। बहुत सी जुबानें सीखीं। भारत में भी आये थे। उन्होंने बहुत सी किताबें लिखी हैं, जिनमें गुलिस्तां, बोस्तां, मशहूर हैं।

एक बार चचा सादी सफ़र करते-करते किसी शहर में पहुंचे वहां उनके एक दोस्त थे। वे अपने दोस्त के यहां ठहरे। दोस्त ने बड़ी खातिर की। चचा के लिए अच्छे-अच्छे खाने पकवाये, जब खाना सामने आया, तो चचा बोले :—

"हाय दावते शीराज़"

यह सुनकर उनके दोस्त को बड़ा ताज्जुब हुआ, सोचा शायद शीराज़ की दावत बड़ी अच्छी होती होगी। इसलिए अगले दिन उसने और ज्यादा अच्छी दावत की। अच्छे-से-अच्छे खाने पकवाये, परन्तु जब दस्तरख़ान लगवाया गया तो चचा ने फिर वही बात दुहराई।

"हाय दावते शीराज़।"

अपने दोस्त का यह तकल्लुफ़ और एहतमाम देखकर चचा बहुत ज्यादा न ठहरे और जल्दी ही चले गये।

कुछ दिनों बाद वही दोस्त शीराज़ आये और चचा सादी के

यहां ठहरे। सोचा अब "दावते शीराज़" देखेंगे, जिसके लिए सादी आह भरा करते थे। चचा सादी अपने दोस्त से मिले तो बड़े तपाक से और उनके आने पर खुशी भी ज़ाहिर की। मगर जब खाने का समय आया तो वही रोज़ की दाल रोटी लाकर सामने रख दी और बोले :— "बिस्मिल्लाह, खाइये।" और खुद भी शौक से खाने लगे।

दोस्त को बड़ा ताज्जुब हुआ। वह कुछ कहने ही वाला था कि चचा खुद बोल उठे :—

"भई, वहां जो मैंने दावते शीराज़ के लिए आह भरी थी, उसका मतलब यह था कि दावत में तकल्लुफ़ न बरता जाय, ताकि मेहमान आकर चाहे कितने दिन ठहरे, मेज़बान को बोझ न मालूम हो। आपका खाने का इन्तज़ाम और तकल्लुफ़ देखकर मुझे दुःख हुआ, इसलिए चाहते हुए भी, आपके पास ज़्यादा दिनों न ठहर सका।"

८

ज़िम्मेदारी का एहसास

हज़रत उमर (रज़ि०) मुसलमानों के ख़लीफ़ा थे। ख़लीफ़ा का फ़र्ज़ है कि वह सबकी देख-रेख करे। आप अपना फ़र्ज़ ख़ूब समझते थे, इसीलिए आप उसे पूरा करने के लिए बड़ी मेहनत करते थे। दिन-रात एक कर देते थे, दिन में तो आप अपना फ़र्ज़ निभाने में लगे ही रहते थे, रात में भी बहुत कम आराम करते। ज़्यादातर जनता की देख-भाल के लिए गश्त लगाया करते।

एक दिन की बात है, आप गश्त लगाने निकले। घूमते-फिरते दूर निकल गए। वापसी पर एक झोपड़ी पर नज़र पड़ी, देखा कि एक औरत चूल्हा जलाये बैठी है। चूल्हे पर हांडी चढ़ी हुई है। और उसके बच्चे रो रहे हैं, औरत उन्हें बहला रही है, मगर वे किसी तरह ख़ामोश नहीं होते। बच्चों का रोना-बिलखना देख कर हज़रत उमर (रज़ि०) का दिल भर आया। आप क़रीब गए, देर तक देखते रहे। मगर उनकी समझ में नहीं आया कि बात क्या है, आख़िर औरत के पास जाकर बच्चों के रोने का सबब पूछा, उसने बताया कि ये बच्चे भूख के मारे बिलख रहे हैं।

"इन्हें खाना क्यों नहीं देतीं?" हज़रत उमर ने पूछा, इतनी देर से खड़ा देख रहा हूं, तुम्हारी हाँडी चढ़ी है, आख़िर यह कब तैयार होगी?"

"हाँडी में कुछ है नहीं।" औरत ने जवाब दिया, "बच्चों को

बहलाने के लिए सिर्फ़ पानी चढ़ा दिया है। चाहती हूँ कि किसी प्रकार इन्हें नींद आ जाय और यह सो जाँय।

हज़रत उमर (रज़ि०) ने देखा तो सचमुच हांडी में सिर्फ़ पानी और कुछ कंकरियां थीं। इसका सबब यह था कि खाने को कुछ नहीं था, बच्चों का भूख से बुरा हाल था। उनकी तसल्ली के लिए औरत ने चूल्हा जलाकर हाँडी में पानी और कंकरियाँ डाल दी थीं, ताकि बच्चे समझें कि खाना पक रहा है। कुछ देर में नींद आ जायेगी। और यह सो रहेंगे, फिर किसी न किसी तरह रात कट जाएगी। औरत बेचारी बेवा थी, बच्चे यतीम और अनाथ थे। घर में कमाने वाला कोई न था, बैतुलमाल (सरकारी ख़ज़ाने) से भी अभी तक कोई वज़ीफ़ा मुक़र्रर नहीं हुआ था। दर्द और ग़म की यह कहानी सुनकर हज़रत उमर (रज़ि०) की आंखों में आंसू जारी हो गये। ऐसा मालूम होता था कि आप पर ग़म का एक पहाड़ टूट पड़ा। आपने दर्द के साथ कहा:—

"माई तुमने ख़लीफ़ा को ख़बर क्यों न दी?"

औरत :— "मेरे और उमर के बीच अल्लाह फ़ैसला करेगा, मैं औरत ज़ात किससे कहती फिरूं। उसका फ़र्ज़ है कि वह अपनी जनता की ख़बर रखे। अगर वह अपनी ज़िम्मेदारी पूरी नहीं कर सकता तो वह ख़लीफ़ा क्यों हो गया?"

हज़रत उमर (रज़ि०) पर मानो बिजली गिर गयी। यह सुनकर वह तुरन्त भागे हुए बैतुलमाल पहुंचे।आटा, गोश्त, घी और खजूरें लीं, पीठ पर लादकर चलने लगे तो उनके ग़ुलाम ने कहा :—

"ऐ मुसलमानों के अमीर आप क्यों ज़हमत कर रहे हैं, लाइये मैं पहुंचा दूं।"

हज़रत उमर (रज़ि०) ने कहा, "नहीं! जब क़ियामत में तुम

मेरा बोझ नहीं उठा सकते, तो आज मैं तुमसे क्यों उठवाऊँ। यह कहकर आप सारा सामान खुद लाद कर उस औरत के पास पहुंचे, खुद बैठकर आग फूंकी, खाना तैयार करके बच्चों को पेट भर खिलाया, बच्चे हंसी-खुशी सो गए।

चलते समय औरत ने कहा :–

"ख़लीफ़ा बनने के लायक़ तो तुम हो, न कि उमर।

हज़रत उमर बोले, "माई! माफ़ करना, उमर मैं ही हूं, मुझसे सचमुच ग़लती हुई कि अब तक तुम्हारी ख़बर न ली।"

इसके बाद हज़रत उमर (रज़ि०) ने बैतुलमाल से औरत और बच्चों का वज़ीफ़ा मुक़र्रर करा दिया।

सवाल :

१. हज़रत उमर (रज़ि०) का क्या उसूल था?
२. औरत से क्या बातचीत हुई?
३. बच्चों को बहलाने के लिए औरत ने क्या किया था?
४. हज़रत उमर (रज़ि०) ने किस तरह मदद की?
५. चलते समय औरत ने क्या कहा?"

९

बेटे के लिए क़ुरबानी

हिन्दुस्तान में मुग़ल बादशाहों ने बहुत दिनों तक हुकूमत की, मुग़ल हुकूमत को सबसे पहले क़ायम करने वाला बाबर बादशाह था। वह अपने लड़के हुमायूँ से बड़ी मोहब्बत करता था।

एक बार की बात है। हुमायूँ सख़्त बीमार पड़ा, उस समय वह संभल में था। बाबर ने उसे आगरा बुला भेजा। रास्ते में बड़ी देख-भाल की गयी, फ़िर भी आगरा पहुँचते-पहुँचते हुमायूँ को सरसाम हो गया। और हालत इतनी बिगड़ गयी कि हकीमों और वैद्यों ने जवाब दे दिया। अब तो बाबर को बड़ी फ़िक्र हो गयी। दिन-ब-दिन हालत ख़राब होती गई। बाबर अपने बेटे के लिए बहुत फ़िक्रमन्द रहने लगा। उसकी परेशानी देखकर खुद हुमायूँ की माँ अपना दुःखदर्द भूल गयी। और बादशाह को समझाने-बुझाने लगी कि आप इतना क्यों घबराते हैं? आपके और कई लड़के हैं। आप खुद बादशाह हैं। बादशाहों को किस बात का दुःख हो सकता है?

बाबर ने जवाब दिया, तुम्हारा कहना ठीक है। मैं बादशाह ज़रूर हूँ, मगर साथ ही साथ बाप भी तो हूँ। अपने प्यारे बेटे की सख़्त बीमारी कैसे सहन करूँ?"

जब हुमायूँ की हालत बहुत ख़राब हो गई और जीने की उम्मीद न रही तो बाबर ने अपने दरबारियों को बुलाकर पूछा :—

"अब हुमायूँ के लिए क्या किया जाय?" लोगों ने अलग-अलग रांय दी। एक ने कहा, "आप अपनी सबसे प्यारी चीज़ उनके बदले में क़ुरबान कर दें। शायद अल्लाह मियाँ क़ुबूल कर लें और यह बच जायँ।"

बाबर के दिल में यह बात बैठ गई। उसने पूछा :– "मेरे ख़ज़ाने में सबसे क़ीमती चीज़ कौन सी है, जिसे मैं क़ुरबान कर दूं?"

लोगों ने कहा, "हीरे जवाहरात और रुपये पैसे। आप इन्हें ग़रीबों में बांट दें।"

बादशाह को यह जवाब पसन्द न आया। उसने सोचा, "मेरी सबसे प्यारी चीज़ तो मेरी जान है, बेटे के बदले तो मुझे अपनी जान क़ुरबान करनी चाहिए।"

यह सोचकर बाबर ने रोज़ा रखा, इबादत की, फिर संजीदगी से हुमायूँ के कमरे में दाख़िल हुआ। तीन बार उसके पलंग का चक्कर लगाया। चक्कर लगाते समय वह गिड़गिड़ा कर दुआ करता जा रहा था कि "ऐ अल्लाह! मेरे बेटे की जान बच जाय उसके बदले में मेरी जान ले ले। अल्लाह ने उसकी दुआ सुन ली। हुमायूँ धीरे-धीरे अच्छा होने लगा, अब बाबर बीमार पड़ा। और कुछ दिनों बाद उसी बीमारी से उसकी मौत हो गयी।"

सवाल :

१. बाबर कौन था? उसने हुमायूँ की बीमारी में क्या किया?
२. दरबारियों ने क्या सलाह दी?
३. बाबर ने बेटे पर जान कैसे क़ुरबान की?

१०

एहतियात

हज़रत अबूबक्र (रज़ियल्लाहुअन्हु) बहुत सादा ज़िंदगी गुजारते थे। अपना काम खुद करते, दूसरों की भी ख़िदमत् करते। वे कपड़े की तिजारत किया करते थे। ख़लीफ़ा होने के बाद भी आप ने कारोबार जारी रखा। कपड़ों की गठरियाँ कन्धों पर लाद कर बाज़ारों और गलियों में बेचा करते। इसी आमदनी से उनका ख़र्च चलता, मगर ख़लीफ़ा होने की वजह से उनकी ज़िम्मेदारियाँ बहुत बढ़ गई थीं। अब कारोबार के लिये समय नहीं मिलता था, इसीलिए आपको कारोबार छोड़ना पड़ा और मुसलमानों की सलाह से बहुत थोड़ी रकम बैतुलमाल से लेकर काम चलाने लगे।

एक दिन उनकी बीवी ने कहा, 'ऐ मुसलमानों के अमीर! आज कुछ मीठी चीज़ें खाने को जी चाहता है, अगर आप मीठा मंगा देते तो अच्छा होता।'

आप ने फ़रमाया, "बैतुलमाल इसके लिए नहीं है। और मेरे पास भी पैसे नहीं हैं, जिससे मीठा मँगा दूँ।

यह सुनकर उनकी बीवी चुप हो गई। और बैतुलमाल की आमदनी से रोज़ाना थोड़ा-थोड़ा बचाकर एक दिन मीठा मँगवाया। मीठा खाना पका कर हज़रत के पास ले गई, तो उन्होंने पूछा :—

"तुम्हें मीठा कहाँ से मिल गया?"

उनकी बीवी ने बताया कि किस तरह कई दिन से बचा-बचा

कर उन्होंने इसके लिए पैसे जमा किए थे।

हज़रत बोले, "तुम बचाती रहीं और घर में किसी को पता भी न लग सका कि हमारे खाने में कुछ कमी आ गई है, इसका मतलब तो यह है कि हम इतनी रक़म बैतुलमाल से ज़्यादा ले रहे थे।"

इसके बाद आपने अपने वज़ीफ़े में से इतने पैसे कम करा दिये।

सवाल :

१. हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) के गुज़र बसर का क्या इन्तज़ाम था?
२. आपकी अपनी बीवी से क्या बातचीत हुई?
३. आपने अपने वज़ीफ़े में कमी क्यों करा दी?

११

अमन की कोशिश

इस्लाम से पहले अरब के लोग बड़े लड़ाकू थे। बात-बात पर लड़ते और अगर किसी तरफ़ का कोई आदमी मारा जाता तो जब तक उसका बदला न ले लेते, चैन से न बैठते, इस तरह रोज़ लड़ाइयां होती रहतीं। और जब एक बार लड़ाई की आग भड़क उठती तो फिर सालों तक बुझने में न आती। और अरब के एक बहुत बड़े हिस्से के अमन को जला कर राख कर देती। इन लड़ाइयों की वजह से देश में बड़ी बेचैनी रहती, हज़ारों आदमी तबाह हो जाते। किसी को भी अपने और अपने ख़ानदान और रिश्तेदारों की जान महफ़ूज़ नज़र न आती।

इस ख़ून ख़राबे का अंजाम यही होता कि सैकड़ों औरतें बेवा और हज़ारों बच्चे यतीम हो जाते। इन बेवाओं और यतीमों की कोई ख़बर लेने वाला न होता, ज़ालिम लोग उन्हें सताते और तरह-तरह से परेशान करते, ग़ुलामों का हाल तो उनसे भी बुरा था। उनके साथ बिल्कुल जानवरों की तरह सलूक किया जाता।

प्यारे नबी (सल्ल०) अभी कम उम्र ही थे। अल्लाह ने आपको अभी नबी भी नहीं बनाया था। परन्तु आप शुरू ही से बहुत नेक थे। इन दुःखभरी चीज़ों को देखकर आप बहुत कुढ़ते। आप इस बात की कोशिश करते कि किसी तरह इस प्रकार का वाक़िया ही न हो जिससे लडाई झगड़े और देश का अमन जाता रहे। इसलिए हजरे

असवद (काला पत्थर) को काबे की दीवार में लगाने के सिलसिले में जब क़ुरैश के सरदारों की तलवारें खिंच गईं और लगता था कि ख़ून ख़राबा होकर रहेगा, उस समय हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने कितने अच्छे ढंग से झगड़े को ख़त्म कर दिया था। आपने (सल्ल०) एक चादर में हजरे असवद को रखवाया, फिर एक-एक किनारा सारे सरदारों को पकड़वाया और ले जाकर दीवार में लगवा दिया। और इस प्रकार अरब वासियों को एक बड़ी तबाही से बचा लिया।

इसी बीच इत्तेफ़ाक़ से एक विदेशी ताजिर तिजारत का सामान लेकर मक्का आया।यहाँ लोगों ने उसका सामान लेकर अपने घरों में रख लिया और क़ीमत नहीं दी। वह बेचारा रोता-पीटता कई आदमियों के पास गया, परन्तु किसी ने उसकी मदद नहीं की। एक विदेशी ताजिर को इस हाल में देख कर आप (सल्ल०) को बहुत दुःख हुआ। आप (सल्ल०) अक्सर इस प्रकार के ज़ुल्मों की रोकथाम की तदबीर सोचते रहते थे।

अरब के कुछ नेक दिल लोगों ने पहले से ही एक समझौता कर रखा था, जिसका नाम 'हल्फ़ुल फ़िज़ूल' था। इसके मेम्बर इस बात का अहद करते थे कि हम सब मिलकर पीड़ित और मज़लूम लोगों की मदद किया करेंगे, परन्तु धीरे-धीरे लोगों ने इस अहद को भुला दिया था। आपने बहुत से क़बीलों के सरदारों और समझदार लोगों को देश की इस तबाही, लूट-खसोट, बदअमनी, रास्तों की ख़तरनाकी, ग़रीबों, मुहताजों, और मुसाफ़िरों के साथ बुरा सुलूक और उसके सुधार की ओर ध्यान दिलाया। आख़िर एक कमेटी बन गयी जिसमें बनू हाशिम, बनू अब्दिल मुत्तलिब, बनू असद, बनू ज़ुहरा और बनू तमीम शामिल थे।

इस कमेटी के मैम्बर यह अहद किया करते थे :

१. हम देश से बदअमनी दूर करेंगे,

२. हम मुसाफ़िरों की हिफ़ाज़त किया करेंगे,

३. हम ग़रीबों और बेसहारा लोगों की मदद किया करेंगे,

४. हम ताक़तवर को कमज़ोरों पर ज़ुल्म करने से रोकेंगे।

इस तदबीर से देश की बदअमनी एक हद तक दूर हो गयी, लोगों के माल और जान भी बहुत कुछ महफ़ूज़ हो गये। आप (सल्ल०) नबी हो जाने के बाद भी फ़रमाया करते थे–

"मैं आज भी उस समझौते पर अमल करने को तैयार हूं।"

सवाल :

१. हल्फ़ुल फ़िज़ूल के बारे में तुम क्या जानते हो?

२. हुज़ूर (सल्ल०) फ़साद और फ़ितनों से बचने के लिए क्या तदबीर करते थे?

३. आप (सल्ल०) ने अमन क़ायम करने की क्या राह निकाली?

४. समझौते की शर्तें क्या थी?

१२

सब्र

प्यारे नबी० (सल्ल०) के एक साथी का नाम हज़रत अबूतलहा था। उनकी बीवी बड़ी नेक थीं। इनका एक नन्हा-मुन्ना बच्चा था। वह बच्चा बहुत प्यारा था, इत्तिफ़ाक़ से एक दिन बच्चा बीमार पड़ा और कुछ दिन की बीमारी के बाद वह गुज़र गया।

प्यारे बच्चे के इन्तिक़ाल से माँ को बहुत दुःख हुआ, मगर वह थीं बड़ी सब्र वाली औरत, उन्होंने बच्चे की लाश एक कपड़े में लपेट कर एक ओर रख दी और घर का काम-काज करने में लग गईं।

इतने में बाहर से उनके शौहर आ गये। उन्होंने अभी खाना नहीं खाया था, घर में पैर रखते ही बीवी से बच्चे का हाल मालूम किया। बीवी ने गोल-मोल सा जवाब दे दिया, जब वे खाना खा चुके तो बोलीं :—

"क्यों जनाब, एक आदमी अगर कुछ दिनों के लिए किसी को कोई चीज़ उधार दे और समय गुज़रने के बाद वह अपनी चीज़ वापस माँगे तो क्या उधार लेने वाले को इंकार करना चाहिए? शौहर ने कहा— "हर्गिज़ नहीं, जब असल मालिक अपनी चीज़ माँगता है तो भला इंकार कैसे किया जा सकता है?"

अब बीवी को और हिम्मत हुई। बोलीं :— "वह हँसता

खेलता बच्चा जो अल्लाह ने अमानत के रूप में हमारे हवाले किया था, वापस ले लिया। आप सब्र से काम लें और बच्चे के लिए कफ़न और दफ़न का इंतज़ाम करें।

कफ़न दफ़न से निबटने के बाद मियाँ-बीवी दोनों अल्लाह के रसूल के पास हाज़िर हुए। और आपको पूरा क़िस्सा सुनाया। मियाँ-बीवी के इस सब्र से आप पर बड़ा असर हुआ। अल्लाह से दुआ की और कुछ दिनों के बाद हज़रत तलहा के घर एक और बच्चा पैदा हुआ। उसका नाम अब्दुल्लाह रखा गया। यही अब्दुल्लाह बड़े होकर बड़े आलिम और बड़े नेक बुज़ुर्ग हुए। जिन्होंने माँ-बाप दोनों का नाम रोशन किया। अल्लाह ने उनकी माँ को सब्र और शुक्र का इतना बड़ा बदला दिया।

१३

पड़ोसी का हक़

एक बड़े अल्लाह वाले बुज़ुर्ग गुज़रे हैं! उनका नाम था शेख़ अब्दुल क़ादिर (रह०) आप गीलान के रहने वाले थे। इसीलिए आपको गीलानी भी कहा जाता है। कुछ लोग आपको 'बड़े पीर साहब' के नाम से भी याद करते हैं। आप बड़े अल्लाह वाले थे। आप पर अल्लाह की रहमत हो।

आपके पड़ोस में एक यहूदी रहता था, जब आप नमाज़ पढ़ते या क़ुरान शरीफ़ पड़ते तो यहूदी शोर मचाता, अक्सर बाजा बजाता, ताकि शेख़ की इबादत में बाधा पड़े। आप यहूदी की सारी हरकतें सहन करते, न उसे खुद रोकते और न किसी को रोकने देते।

एक बार यहूदी किसी वजह से गिरफ़्तार हो गया, पुलिस ने उसे जेल में बन्द कर दिया। शेख़ को इसकी ख़बर न थी। कई दिन तक बाजा और शोर की आवाज़ न आई, आपने वजह मालूम की तो पता चला कि यहूदी हवालात में है।

शेख़ को इसका बड़ा अफ़सोस हुआ कि इनका पड़ोसी इतनी बड़ी मुसीबत में पड़ गया और इन्हें ख़बर तक न हुई। वे फ़ौरन अदालत में पहुंचे और हाकिम से कहा कि अगर मेरे पड़ोसी का जुर्म ऐसा है कि जुर्माना देने से माफ़ हो सकता है तो मैं उसकी ओर से जुर्माना देने के लिए तैयार हूँ, आप उसे छोड़ दें और अगर अभी पूरी तरह से मुक़दमे की छान-बीन न की गई हो तो उस पर नये सिरे से

सोच लिया जाय, हो सकता है कि मेरा पड़ोसी बेक़सूर निकले। हाकिम ने काग़ज़ात मँगवाकर जाँच की, क़िस्मत से यहूदी बेगुनाह निकला। मुक़दमा ख़ारिज हो गया और वह जेल से छूट गया।

यहूदी पर उनके इस अच्छे बर्ताव का बहुत असर हुआ। ख़िदमत में पहुँचकर अपने बुरे बर्तावों की माफ़ी माँगी और बोला, मैंने आपको बहुत सताया। हमेशा आपकी इबादत में बाँधा डालता रहा, आपको तो मेरी गिरफ़्तारी पर ख़ुश होना चाहिए था, परन्तु इस मुसीबत में आपने बदला लेने के बजाय मेरी मदद की और मुझे जेल से छुड़ाया। आपके बर्ताव से मुझ पर बहुत असर पड़ा है। ख़ुदा के लिए आप मुझे माफ़ कर दें। मैं अब कभी आपकी बेअदबी न करूंगा।

आपने फ़र्माया :— "मैंने तुम्हारे साथ कौन सा एहसान किया है, मुझे तो दुःख है कि मैं इससे ज़्यादा तुम्हारी मदद न कर सका। इस्लाम ने तो पड़ोसी का बहुत बड़ा हक़ बतलाया है।"

यह सुनकर वह और ज़्यादा मुतास्सिर हुआ, उसने कहा :—

बेशक इस्लाम सच्चा दीन है, मैं अब मुसलमान होता हूँ। इसके बाद वह कलिमा पढ़कर मुसलमान हो गया।

सवाल :

१. बड़े पीर साहब का पूरा नाम क्या था?
२. आपका पड़ोसी कैसा आदमी था?

१४

मेहमान की ख़ातिरदारी

एक बार भूख से निढाल एक सहाबी (रज़ि०) हुज़ूर (सल्ल०) के पास पहुंचे। आप (सल्ल०) ने इन्हें खाना खिलाना चाहा, मालूम किया तो पता चला कि पानी के सिवा घर में कुछ नहीं है। यह कोई नई बात न थी, प्यारे नबी (सल्ल०) के यहाँ अक्सर खाने को कुछ न होता और भूखा रहना पड़ता था। अब क्या करें, उस वक़्त कई सहाबी हुज़ूर (सल्ल०) के पास बैठे थे। आप (सल्ल०) ने फ़र्माया, "आज की रात इस मेहमान की दावत कौन अपने ज़िम्मे लेता है?"

हज़रत अबू तलहा (रज़ि०) ने जवाब दिया, "ऐ अल्लाह के रसूल! मैं इसकी ज़िम्मेदारी लेता हूँ।"

और मेहमान को लेकर आप अपने घर आये। घर में मालूम करने पर पता चला कि यहाँ भी अल्लाह का नाम है। सिर्फ़ बच्चों के लिए थोड़ा सा खाना रखा था।

आपने बीवी से कहा, "तुम बच्चों को किसी तरह बहला कर सुला दो और जब मैं मेहमान को घर में ले आऊँ तो ठीक करने के बहाने चिराग़ बुझा देना, हम लोग भी मेहमान के साथ बैठ जाऐंगे। खाना मेहमान के सामने रख देंगे। हम लोग भूखे उठ जाऐंगे। मेहमान को अंधेरे में दिखाई देगा नहीं, वह समझेगा कि घर वालों ने भी खा लिया। इस तरह वह अच्छी तरह खा लेगा और इतने खाने में उसका पेट भी भर जाएगा।

और फ़रमाबरदार बीवी ने ऐसा ही किया, बहाने से चिराग़ बुझा दिया, सब लोग साथ बैठ गए। मेहमान समझा कि सब खा रहे हैं। उसने इत्मीनान से पेट भर कर खा लिया। घर वाले भूखे रह गए। मगर ख़ुश थे कि चलो मेहमान का पेट तो भर गया और हमारे भूखे रहने की उसे ख़बर भी नहीं हुई। वरना मेहमान को तकलीफ़ होती।

सुबह को जब अबू तलहा (रज़ि०) हज़ूर (सल्ल०) की ख़िदमत् में पहुँचे तो आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, तलहा! तुम्हारे रात के अच्छे सलूक से अल्लाह बहुत ख़ुश हुआ और यह आयत उतरी है :—

"वे दूसरों को अपने ऊपर तर्जीह देते हैं चाहे वे फ़ाँक़ा ही करें।"

१५

कितने ईमानदार थे!

हज़रत अली (रज़ि०) के ख़िलाफ़त के वक़्त की बात है कि एक बार बैतुलमाल (ख़ज़ाने) में मोतियों का एक हार आया। उस हार की ख़बर आप की बेटी को हुई। ईद आने ही वाली थी। बेटी ने सोचा कि ईद में सारी औरतें अच्छे-अच्छे कपड़े और क़ीमती ज़ेवरात पहनेंगी, क्यों न मैं भी बैतुलमाल से मोतियों का हार मँगवाकर पहन लूँ, ईद के बाद वापस कर दूंगी। यह सोच कर बैतुलमाल के मुहाफ़िज़ से कहलवा भेजा कि मोतियों का हार मुझे उधर दे दो। मैं ईद बाद लौटा दूंगी।

तीन दिन के वायदे पर मुहाफ़िज़ ने हार भेज दिया। ईद के दिन बेटी ने हार पहना। इत्तिफ़ाक़ से हज़रत अली (रज़ि०) की नज़र आप पर पड़ गई। आपने पहचान लिया और फ़र्माया "मैं इस लड़की का हाथ काटूंगा, इसने बैतुलमाल से चोरी की है।"

बेटी ने सफ़ाई पेश की और कहा, मैंने यह हार मुहाफ़िज़ की इजाज़त से तीन दिन के लिए मगनी मंगाया है, कल इसे लौटा दूंगी।

यह सुनकर आप ने मुहाफ़िज़ को बुलाया और कहा "क्या तुम मुहाफ़िज़ हो कर मुसलमानों की अमानत में ख़ियानत करते हो।"

मुहाफ़िज़ :—"भला मैं मुसलमानों के माल में ख़ियानत कर सकता हूं, मैंने कभी ऐसा नहीं किया।"

हज़रत अली (रज़ि०) :— "तुम ने मोतियों का हार मेरी

लड़की को क्यों दे दिया?"

मुहाफ़िज़ :– "बेटी ने तीन दिन के वायदे पर मंगवाया था, इस लिए दे दिया, वरना कभी नहीं देता।"

हज़रत अली (रज़ि०)– "तो क्या यह ख़ियानत नहीं है? तुमने मुसलमानों की इज़ाज़त के बिना ऐसा क्यों किया। हार फ़ौरन बैतुलमाल में जमा करो। मैं अपनी बेटी की इस हरकत पर सख़्त नाराज़ हूं। अगर मंगनी के रूप में और तुम्हारी इजाज़त से न लिया होता तो चोरी की सज़ा में उसका हाथ काटता।" इसके बाद वह हार मंगवा कर बैतुलमाल में पहुंचा दिया गया।

सवाल :

१. बेटी ने हार कैसे हासिल किया था? हज़रत अली (रज़ि०) को कैसे पता चला?
२. आप (रज़ि०) की मुहाफ़िज़ से क्या बात-चीत हुई?
३. आप अपनी लड़की की इस हरकत पर क्यों नाराज़ हुए?

१६

बहादुरी

सुलतान सलाहुद्दीन मुसलमानों का एक बहुत मशहूर बादशाह हुआ है। वह बचपन ही-से बड़ा बहादुर था। एक बार की बात है कि शहर रिहा की ईसाई फ़ौजों ने उस शहर पर हमला कर के सारा शहर तबाह कर दिया। माल और सामान लूट लिया, औरतों को पकड़ ले गये।

सलाहुद्दीन अभी लड़का था, मगर ईसाइयों के जुल्म उससे सहन न हुए। एक बूढ़े तुर्की को साथ लिया और बादशाह के पास दुहाई लेकर गया। इमामुद्दीन जंगी वहाँ का बादशाह था, उसकी राजधानी शहर मूसल थी। सुलतान जंगी भी बड़ा बहादुर बाहशाह था।

यह दोनों मूसल के निकट पहुंचे। इत्तिफ़ाक़ से सुलतान जंगी घोड़े पर सवार कहीं जा रहा था। ये दोनों चीख़-चीख़ कर रो रहे थे। सुलतान ने घोड़ा रोक कर रोने की वजह पूछी। उन्होंने सारा हाल कह सुनाया। सुलतान ने पूछा :—

"इतना बड़ा जुल्म हुआ और तुमने कुछ न किया।"

हालांकि सलाहुद्दीन अभी लड़का ही था, मगर था बड़ा निडर, झट सामने आया और बोला "हम क्या करते, हमरा सुलतान बड़ा बे-ख़बर है। हमारे ऊपर जुल्म होते हैं और वह गहरी नींद में है। हमारे लिए कुछ नहीं करता, हम उस के पास दुहाई ले कर जा रहे

हैं।"

यह सुनकर सुलतान घोड़े से उतर पड़ा, बोला, "मैं ही वह बदक़िस्मत जन्गी हूं, जिसकी जनता पर ज़ुल्म हो रहे हैं। और वह बे-ख़बर है।"

यह सुनकर सलाहुद्दीन ने मांफ़ी माँगी, और तफ़सील से सारी बातें बताईं। बादशाह उन्हें क़िले में ले गया। आराम से रखा, अपने सारे सिपाहियों को जमा करके रिहा की दुर्दशा सुनायी। सब को शर्म दिलाई और आख़िर में कहा "कल सुबह मेरी तलवार रिहा के क़िले पर चमकेगी, तुम में से कौन-कौन मेरा साथ देगा?"

सारे फ़ौजी हैरान थे कि रिहा मूसल से नव्वे मील की दूरी पर है, रातों रात इतनी दूरी तै करना और वहाँ पहुंच कर हमला करना यह कैसे मुमकिन है? बादशाह को क्या हो गया है? भला यह मुमकिन भी है? अभी सब लोग इमकान पर विचार कर ही रहे थे कि सलाहुद्दीन बोल उठा—

"हम, कल बादशाह के साथ होंगे।"

सब घबरा कर सलाहुद्दीन की ओर देखने लगे। कुछ ने मज़ाक उड़ाते हुए कहा "बेटे! जाओ खेलो-कूदो, यह जंग है, बच्चों का खेल नहीं हैं।"

सुलतान जंगी ने यह बातें सुनीं, ग़ुस्से से चेहरा लाल हो गया। गरज कर बोला। "यह बच्चा सच कहता है इसकी सूरत बताती है कि यह मेरा साथ देगा।"

अब तो फ़ौज़ियों को बड़ी शर्म आयी। सब तैयार हो गये। दूसरे दिन दोपहर तक रिहा के फाटक पर पहुंच गये। इत्तिफ़ाक़ से रिहा का ईसाई बादशाह आराम करने के लिए दूर के गांव में चला गया था। अब तो बड़ा अच्छा मौक़ा मिल गया। सुलतान जंगी ने

धावा बोल दिया। बड़े घमासान की लड़ाई हुई। ईसाई सेना का सरदार बड़ी आन-बान से सामने आया, सुलतान जंगी ने तेज़ वार किया, परन्तु उसकी ज़िरह लोहे की थी। ज़िरह तो कट गयी परन्तु वह घायल न हुआ। उसने सुलतान पर बड़े ज़ोर से हाथ मारा, भाला पड़ने ही वाला था कि सलाहुद्दीन बिजली की तरह बीच में आ गया और ज़िरह के कटे हुये हिस्से पर इतने ज़ोर से वार किया कि सरदार के दो टुकड़े हो गये। सरदार का मारा जाना था कि ईसाई फ़ौज भाग खड़ी हुई। रिहा पर मुसलमानों का क़ब्ज़ा हो गया। मुसलमान औरतें वापस मिलीं।

सलाहुद्दीन की बहादुरी देख कर सब वाह-वाह करने लगे।

सवाल :

१. सलाहुद्दीन कौन था? यह सुलतान जंगी के पास कैसे आया?
२. उसकी शिकायत पर सुलतान जंगी ने क्या किया? फ़ौज चढ़ाई के लिये किस तरह तैयार हुई?
३. ईसाई सेना का सरदार किस तरह मारा गया? उसके क़त्ल का ईसाई सेना पर क्या असर पड़ा?
४. रिहा कैसे जीता गया? जीत के बाद क्या हुआ?

१७

तड़क-भड़क कपड़ों से बचो

हज़रत उमर (रज़ि०) के कपड़े बहुत ही सादा होते थे। आप कहा करते थे कि मुझे तीन चीज़ें बहुत प्यारी हैं, १. नेक बातों की नसीहत करना, २ बुरी बातों से रोकना, ३. पुराने कपड़े इस्तेमाल करना।

आप अक्सर फटे-पुराने कपड़ों में रहते, कभी-कभी तो कुरते में अनेकों पेवन्द लगे होते, एक दिन आप मिम्बर पर खड़े हुये खुतबा दे रहे थे। कपड़ों में बीसियों पेबन्द लगे थे, जिसमें एक चमड़े का भी था। यह उस समय की बात है, जब दुनिया के सब से बड़े राज्य ईरान और रूम को जीता जा चुका था और इस्लामी राज्य दुनिया के एक बड़े भाग तक फैल चुका था। सरकारी ख़ज़ाना भी भरपूर था। मुसलमानों के अमीर का फटा पुराना कपड़ा देख कर कुछ मुसलमानों के दिल में ख़्याल आया कि अब हज़रत उमर (रज़ि०) को अपने कपड़े बदल देना चाहिए और कम से कम फटे-पुराने कपड़ों से तो परहेज़ करना चाहिए।

इसलिए एक वफ़्द बना कर ख़िदमत में पंहुचे, परन्तु वे हज़रत के मिज़ाज को ख़ूब जानते थे, किसी की हिम्मत न हुई। अन्त में आपकी बेटी हज़रत हफ़्सा (रज़ि०) को तैयार किया कि वही दबाव डाल कर हज़रत को फटे-पुराने कपड़े पहनने से रोकें। चूंकि हज़रत हफ़्सा (रज़ि०) हुज़ूर (सल्ल०) की पाक बीवियों में से थीं, इसलिए बेटी होते हुए भी हज़रत उमर (रज़ि०) उनका ख़्याल रखते

थे। हज़रत हफ़्सा (रज़ि०) साहस करके आप के पास गईं और बहुत ज़िद की। हर प्रकार से दबाव डाला। लेकिन आप ने फ़र्माया:—

"बेटी तुम तो रसूल (सल्ल०) के साथ रह चुकी हो, तुम्हारे घर में उनके लिए क्या इन्तिज़ाम था?"

हज़रत हफ़्सा (रज़ि०) ने जवाब दिया, "मेरे कमरे में तो आप (सल्ल०) के सोने के लिए एक टाट था, जो दो तह कर के ज़मीन पर बिछा दिया जाता था, उसी पर आप (सल्ल०) लेटे रहते थे। अक्सर पाक जिस्म पर निशान पड़ जाते थे। एक दिन मैंने टाट को चार तह करके बिछा दिया तो हुज़ूर (सल्ल०) ने फ़र्माया कि "हफ़्सा! आज तुमने क्या बिछा दिया, मुझे बहुत गहरी नींद आई।" मैंने बताया तो आप (सल्ल०) ने फ़र्माया कि "इसे पहले ही की तरह बिछाया करो।"

यह सुनकर हज़रत उमर (रज़ि०) ने फ़रमाया "क्यों हफ़्सा! जिस के रसूल ने इतनी तंगी और सादगी के साथ ज़िन्दगी गुज़ारी, उस के मानने वालों को यह कब अच्छा है कि वह ठाट-बाट के साथ रहें और तड़क-भड़क वाले सुन्दर कपड़े पहनें। तुम मुझ पर क्यों दबाव डालती हो?

हज़रत हफ़्सा आपकी बात सुनकर चुप हो गईं और फिर कभी ज़िद नहीं की।

सवाल :

१. हज़रत उमर (रज़ि०) कौन थे? उनकी प्यारी चीज़ें क्या थीं?
२. आप कैसे कपड़े पहनते थे?
३. हज़रत हफ़्सा आप से किस बात पर ज़िद कर रही थीं?
४. आपने हज़रत हफ़्सा (रज़ि०) को किस तरह समझाया?
५. इस कहानी से तुम्हें क्या सबक़ मिलता है?

१८

लोगों की भलाई के काम

हारून रशीद का नाम तो सुन चुके हो, अब्बासी ख़ानदान में वह बहुत बड़ा बादशाह हुआ है। उसकी रानी का नाम ज़ुबैदा ख़ातून था। यह बहुत नेक औरत थीं। लोगों की भलाई के कामों से उन्हें बहुत लगाव था। अरब के चटियल रेगिस्तान में पानी की कमी को महसूस करके उन्हें बड़ी तकलीफ़ होती थी। ख़ासतौर पर मक्का और उसके आसपास के लोगों की इस परेशानी को वह दूर करना चाहती थीं। अपने राज्य के बड़े-बड़े इंजीनियरों को बुलायां और उनसे कहा:— "कोई ऐसी तरकीब बताओ कि मक्के तक पानी पहुँच जाये ताकि वहां के लोगों की तकलीफ़ दूर हो जाये" महारानी के हुक्म की देर थी, इंजीनियर तुरन्त मौके पर पहुंच गये। घूम-फिर कर अच्छी तरह जायज़ा लिया। आस-पास का नक़्शा तैयार करके रानी के सामने पेश किया और बताया कि तायफ़ के निकट पहाड़ से एक सोता बह कर हुनैन की ओर आता है, इस झरने से नहर निकाल कर मक्के तक पहुंचायी जा सकती है, परन्तु रास्ते में बहुत से पहाड़ हैं। इन्हें काट कर नहर का रास्ता बनाना आसान नहीं है, इस पर बहुत मेहनत और बड़ा धन ख़र्च होगा।

"तुम ख़र्च की परवाह न करो।" महारानी ने कहा, "अगर एक कुदाल मारने की मज़दूरी एक अशरफ़ी भी होगी तो मैं ख़ुशी के साथ अदा करूंगी।"

हुक्म मिलना था कि इंजीनियर अपने काम पर लग गये।

काम शुरू हो गया। तायफ़ से मक्के तक नहर के रास्ते के लिये ज़मीन ख़रीद ली गई। क़रीब के सभी झरनों, सोतों और चश्मों को मिला कर एक बड़ा सोता तैयार कर लिया गया, फ़िर इससे नहर निकाल कर मक्के तक पहुंचाई गयी।

तीन साल की लगातार मेहनत और बड़ी दौलत ख़र्च करने के बाद यह नहर तैयार हो गई। महारानी की ख़्वाहिश पूरी हुई। मक्के तक नहर पहुंच गई, महारानी की यह यादगार नहरे ज़ुबैदा के नाम से अब तक मशहूर है।

महारानी ने चाहे ज़मज़म (ज़मज़म नामी कुंवा) को भी साफ़ कराया था, इस में भी काफ़ी पानी निकल आया था, जिससे मक्के वालों को बहुत आराम पहुंचा।